कहें कहानी, रचें कहानी

(कहानी कार्यशालाओं के अनुभव)

सचेतन

परिचय

'कहें कहानी, रचें कहानी' सचेतन द्वारा बच्चों के साथ आयोजित की गयी 'स्टोरी लैब' अर्थात कहानी कार्यशालाओं के अनुभवों का दस्तावेजीकरण है. 'स्टोरी लैब' सचेतन की बच्चों के साथ संवाद हेतु अपनाई जाने वाली प्रमुख विधाओं में से एक है. विधा के तौर पर 'कहानी' सदियों से ही लोक जगत में सीखने-सिखाने के माध्यम के रूप में जानी जाती रही है. शब्द्शः देखें तो लैब अर्थात प्रयोगशाला, जहाँ कुछ नया सृजन होता है, उसी प्रकार स्टोरी लैब अर्थात कहानी कार्यशाला में भी बच्चे अपने विचारों और कल्पनाओं को शब्द देते हुए मूर्त करते हैं.

चाहे कहानी सुनाना हो या फिर कहानी बनाना- दोनों ही अवस्थाओं में बच्चों की कल्पनाओं और साथ ही उस कल्पना को अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया में भाषा, शब्द और विचारों की तार्किकता को लेकर होने वाले रचनात्मक संघर्ष की आपा-धापी होती है. कहानी कार्यशालाएं बच्चों की कल्पना और उसको अभिव्यक्त कर पाने की क्षमता विकसित करने की ही विधा है जिसमे कह पाने (articulation), सुन-समझ सकने (listening) एवं लिख कर (writing) अभिव्यक्त कर पाने के कौशल पर कार्य किया जाता है. एक तरह से यह बच्चों में खेल-खेल में सामान्य हिन्दी के तहत नवीन शब्दों, वाक्य विन्यास और लेखन कौशल को सीख पाने को प्रोत्साहित करती है. सचेतन द्वारा इसी आशय से विभिन्न स्थानों पर बच्चों के साथ कहानी कार्यशालाओं के माध्यम से संवाद कायम किया गया. इन कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों की कहानियों के प्रति सोच और जानकारी का ज्ञान भी प्राप्त हुआ. प्रस्तुत रिपोर्ट इन्हीं अनुभवों का संकलन है.

कहानी कार्यशाला : श्रीराम नगर,बोरखेड़ा (17 फरवरी 2013)

श्रीराम बोरखेड़ा क्षेत्र में 21 बच्चों के साथ 'बच्चे और कहानियां' कार्यशाला का आयोजन किया गया. ये सचेतन की पहली कार्यशाला थी जिसके अनुभव से आगे की कार्यशाला आयोजन में दिशा मिली. यह कार्यशाला प्रारंभिक इस दृष्टि से थी कि कहानी लेखन पर जाने से पूर्व ये आकलन भी आवश्यक था कि वर्तमान में उनकी कहानियों के प्रति जानकारी का आकलन किया जाये और उसके आधार पर आगे की गातिविधि तय की जाएँ.

इस कार्यशाला में अमूमन सभी बच्चे स्कूल जाने वाले थे व प्राइमरी स्तर के थे. कार्यशाला की शुरुआत में सहभागी बच्चों से उनके पसंदीदा टीवी कार्यक्रमों के बारे में पूछा गया. एक सेकंड की भी देरी किये बिना पसंदीदा कार्यक्रमों की एक लम्बी सूची हमारे हाथों में थी. ये सूची और लम्बी हो सकती थी यदि बच्चों को रोका न जाता. इसके बाद बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी कहानियों के नाम/ कहानी की प्रचलित किताबों के नाम बताने के लिए कहा गया.

ये क्षण स्तब्ध करने वाला था. बच्चों में ख़ामोशी थी. मुश्किल से तीन कहानियों के नाम सामने आये- 'शेर और खरगोश की कहानी', कौआ और मेंढक', और 'शेर और बन्दर'. ये कहानियां किसी न किसी प्रकार से उनके स्कूल पाठ्यक्रम का हिस्सा थीं, संभवतः इस लिए वे इनके बारे में बता सके. जब उनसे कहानियों की किताबों के नाम जानने चाहे तो उन्होंनें अपनी स्कूल की हिन्दी की किताबों के नाम बताये. एक बात तो स्पष्ट हो चुकी थी की यहाँ बच्चों में कहानियों को लेकर उत्सुकता तो थी परन्तु जानकारी नहीं थी. इसी क्रम में बच्चों को सचेतन टीम द्वारा दस प्रचलित कहानी पत्रिकाओं के नाम/प्रमुख चरित्रों इत्यादि के नाम दिए गए और ये जानना चाहा कि इनमें से बच्चों ने कितनों के बारे में सुना हुआ है? (देखें तालिका-1) उपस्थित बच्चों के समूह में से मात्र दो बच्चों ने क्रमशः दो नामों -'अकबर बीरबल और तेनालीराम' को सुना बताया. बाकी नाम बच्चों की जानकारी की परिधि से बाहर थे.

<table>
<tr><th colspan="3">तालिका-1 कहानियों के प्रति जानकारी</th></tr>
<tr><th>कहानी पत्रिकाओं/चरित्रों के नाम</th><th>सुने हैं/ नहीं सुने हैं</th><th>कहानियाँ जो सुनी थीं</th></tr>
<tr><td>पंचतंत्र</td><td>नहीं</td><td rowspan="10">• शेर व ख़रगोश
• कौआ व मेंढक
• शेर-बन्दर

कहानियों के स्रोत

स्कूल की किताबें, विशेषकर हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकें.</td></tr>
<tr><td>तेनालीराम</td><td>हाँ (1)</td></tr>
<tr><td>जातक कथाएं</td><td>नहीं</td></tr>
<tr><td>अमर चित्र कथा</td><td>नहीं</td></tr>
<tr><td>अकबर बीरबल</td><td>हाँ (1)</td></tr>
<tr><td>लोट-पोट</td><td>नहीं</td></tr>
<tr><td>नंदन</td><td>नहीं</td></tr>
<tr><td>चंपक</td><td>नहीं</td></tr>
<tr><td>चंदामामा</td><td>नहीं</td></tr>
<tr><td>बालहंस/ बाल भास्कर</td><td>नहीं</td></tr>
</table>

बच्चों के साथ चर्चा में स्पष्ट हुआ कि स्कूल की किताबों के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार की किताबों के साथ उनका परिचय ही नहीं था और न ही उन्हे अपने माता-पिता अथवा दादा-दादी इत्यादि से किसी प्रकार की कहानियों को सुनने का अनुभव था. सचेतन सदस्यों द्वारा बच्चों को सचित्र कहानियाँ पढ़ कर सुनाई गयीं. बच्चों के साथ आगे चर्चा में उन्होंने कहानी की किताबें पढ़ने के प्रति अपना उत्साह दिखाया व क्षेत्र में लाइब्रेरी खोलने के प्रति विचार रखा.

कहानी कार्यशाला : तुलापुरा (24 मार्च 2013)

18 बालिकाओं और 9 बालकों सहित तुलापुरा क्षेत्र के कुल 27 बच्चों के साथ सचेतन द्वारा कहानी कार्यशाला का आयोजन किया गया. सहभागी बच्चों में कक्षा आठ तक के बच्चे सम्मिलित थे. पहली कार्यशाला के सहभागी बच्चों की अपेक्षाकृत यहाँ बच्चे अधिक चेतन एवं जागरूक थे. विधा में थोडा परिवर्तन करते हुए कार्यशाला के आरम्भ में बच्चों को उनके पसंदीदा शब्द बोलने के लिए कहा गया जिसके उत्तर में अनेक शब्द आये. उनमे से बच्चों को कोई दो शब्द छांटने के लिए कहा गया. बच्चों ने ‘पतंग’ और ‘फूल’ शब्द पसंद किये जिस पर

उन्हें उनको पसंद करने के कारण/ उक्त शब्दों से स्वयं को कैसे जोड़ते हैं ..इत्यादि को चित्रित करने एवं बताने के लिए कहा गया. इस अभ्यास ने उनके विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया. सचेतन टीम के सहयोग से वे स्वयं को प्रस्तुत कर सके.इसी प्रकार समूह में बच्चों के साथ एक वाक्य दे कर हर बच्चे को उसमे आगे वाक्य जोड़ते हुए कहानी बनाने का अभ्यास किया गया. हर बच्चे के लिए ये गतिविधि सरल नहीं थी. साथी बच्चे के छोड़े वाक्य के आगे तर्कसंगत वाक्य जोड़ना कठिन हो रहा था. क्योंकि न सिर्फ वाक्य जोड़ना था वरन क्रमबद्धता भी बनाये रखना आवश्यक था. जहाँ एकल प्रस्तुति आसन थी वहीँ समूह के साथ प्रस्तुति कठिन हो रही थी. कभी उचित शब्दों का अभाव तो कभी कल्पना का साथ न दे पाने के कारण तो कभी साथी बच्चे के साथ तारतम्यता न बन पाने के कारण गतिविधि बाधित होती रही. बच्चों में कहानी के प्रति कितनी जानकारी है (तालिका 2) ये जानने के लिए उनके साथ पहले उनके पसंदीदा टीवी कार्यक्रमों और फिर कहानियों की किताबों/ पत्रिकाओं के नाम बताने के लिए कहा गया.

तालिका-2 कहानियों के प्रति जानकारी

कहानी पत्रिकाओं/चरित्रों के नाम जो वे बता सके		टीवी कार्यक्रमों के नाम जो वे जानते थे
जंगल बुक	**चंपक**	कहानी पत्रिकाओं की तुलना में वे 20 टीवी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी रखते थे.
बालहंस	**बाल भास्कर**	
विक्रम बेताल	**मैजिक पॉट**	
हातिम की कहानियां	**बालवीर**	
अकबर बीरबल	**काबुलीवाला**	
तेनालीराम	**महाभारत**	

तुलापुरा में बच्चे कहानियों की किताबों/पत्रिकाओं से परिचित तो थे परन्तु उनकी उपलब्धता का अभाव बच्चों के कहानियां पढ़ने की प्रक्रिया में बाधक था. सचेतन टीम द्वारा अपने साथ ले जाई गयी सचित्र कहानी पुस्तकों को पढ़ कर सुनाया गया व बच्चों से उनपर चर्चा की गयी.

कहानी कार्यशाला: टीचर्स कॉलोनी (27 जुलाई एवं15 अगस्त 2013)

इस क्षेत्र में बच्चों के साथ दो कार्यशालाएं आयोजित की गयीं. जुलाई माह की पहली कार्यशाला के बाद सहभागी बच्चों के ही पुनः अनुरोध पर दूसरी बार अगस्त माह में एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गयी. दोनों कार्यशालाओं में कुल मिलाकर 30 बच्चों ने भाग लिया. बच्चों की समझ, ग्राह्य क्षमता एवं सीखने की ललक प्रोत्साहित करने वाली थी. बच्चों के साथ उनके छोटे भाई-बहन भी आ गए थे. उन छोटे बच्चों के साथ भी गतिविधिकरना आवश्यक हो गया था ताकि सहभागी बच्चे उचित तरह से कार्यशाला में भाग ले सकें. सचेतन टीम द्वारा छोटे बच्चों के साथ ड्राइंग आधारित कार्य किया गया व सहभागी बच्चों के साथ नियोजित गतिविधि की गयी. कार्यशाला के आरम्भ में बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी कहानियों, कहानियों की किताबों व उनके पात्रों के बारे में चर्चा की गयी. बच्चों के पास कहानियों के प्रति सोच थी व पढ़ी गयी कहानियों में विविधता भी थी. यहाँ बच्चों के साथ कहानी लेखन पर कार्य किया जा सका.

आरम्भ में प्रत्येक सहभागी बच्चे को उसके नाम में आये प्रत्येक अक्षर से पांच -पांच शब्द बनाने के लिए कहा गया. कुछ के लिए आसान तो कुछ बच्चों के लिए यह थोड़ा कठिन अभ्यास हो गया था. इस अभ्यास के पीछे सोच यही थी कि वे कुछ नवीन शब्दों को सोच पायेंगें. बच्चों ने हिन्दी व अंग्रजी दोनों भाषाओँ का सहारा लिया. जहाँ जिसमे समझ में आया उसमें लिखा. एक रोचक गतिविधि बन पड़ी थी हालाँकि इसमें बच्चों ने अपेक्षाकृत अधिक समय लिया. इसके बाद बच्चों से कोई भी, रैंडमली, शब्द बोलने के लिए कहा गया. बच्चों के बोले शब्द थे- जंगल, नदी, बच्चा, रास्ता, हिरन, कैमरा, बबलू, नैना, परी, तोता व गड्ढा. इन शब्दों को शामिल करते हुए बच्चों को कहानी बनाने के लिए कहा गया. बच्चों को दो -दो की टीम में बंट कर कार्य करने के लिए कहा गया. बच्चों ने कहानी बनाई और प्रस्तुत भी की. इसके बाद कहानी को रोचक बनाने की दृष्टि से उन्हें बीच-बीच में शब्द

के स्थान पर उसका चित्र बनाते हुए (घर शब्द के स्थान पर घर का चित्र बनाना) कहानी लिखने के लिए भी बताया गया. बच्चों द्वारा कहानियों को लिखने के बाद चार्ट पेपर पर सुंदर तरीके से उतरा गया. सभी कहानियों को दीवार पर प्रदर्शित करते हुए समूह वार सभी को बच्चों द्वारा सुनाया गया. बच्चों ने एक-दूसरे की कहानियां सुनीं व अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की. कहीं चित्र को लेकर सवाल थे तो कहीं कहानी में अचानक से कोई भी प्रसंग आने को लेकर कटाक्ष थे. साथ ही अपनी कहानी में क्या छूट गया ये अहसास भी करते जा रहे थे.

कहानी कार्यशाला: पुलिस लाइंस साक्षरता केंद्र (2 अगस्त 2013)

पुलिस लाइंस स्थित साक्षरता केंद्र पुलिस जवानों के परिवार की महिलाओं के लिए विभाग द्वारा संचालित महिला विकास एवं साक्षरता केंद्र है. इन्हीं परिवारों के बच्चों के साथ यहाँ पर भी कहानी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 41 बच्चों द्वारा भाग लिया गया. कार्यशाला के आरम्भ में बच्चों से कहानियों की किताबों के नाम पूछे गए जिन्हें बताने में सफलता नहीं मिली. इस परिस्थिति में सचेतन टीम द्वारा कुछ प्रचलित कहानियों की किताबों के नाम सामने रखे गए जिन पर बच्चों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की (तालिका 3).

तालिका-3 कहानी की किताबों के प्रति जानकारी

कहानी पत्रिकाओं के नाम	कितनों ने सुने हुए थे	कहानी पत्रिकाओं के नाम	कितनों ने सुने हुए थे
पंचतंत्र	6	सिंहासन बत्तीसी	नहीं
तेनालीराम	4	नंदन	नहीं
जातक कथाएं	2	चंपक	नहीं
अमर चित्र कथा	नहीं	चंदामामा	नहीं
अकबर बीरबल	22	विक्रम वेताल	1
मुल्ला नसीरुद्दीन की कहानियां	2	-	-

वस्तुतः, इस अभ्यास से पहले सहजीकरण प्रक्रिया के तहत बच्चों के साथ 'मुझे अच्छा लगता है' नामक अभ्यास किया गया था जिसमें उन्हें जो कार्य करना पसंद आता है उनकी सूची

बनाने के लिए कहा गया था ताकि ये देखा जा सके कि 'कहानियाँ पढ़ने' को कितने बच्चे पसंद करते हैं. उनकी प्रस्तुति में कहीं भी कहानियों को स्थान नहीं था. बच्चों से चर्चा में ये

अवश्य स्पष्ट हो चुका था कि स्कूल में व कभी-कभी परिवार में उन्होंने कहानियां सुन रखीं थी. कछुआ-खरगोश, मगरमच्छ -बंदर, शेर-चूहा इत्यादि कहानियों से वे परिचित थे. पूर्व के सत्रों की भांति यहाँ भी बच्चों से कुछ भी शब्द बोलने के लिए कहा गया. और फिर उनके आधार पर कहानी बनाने का कार्य किया गया.

अभी तक की आयोजित कहानी कार्यशालाओं से विभिन्न शैक्षिक वातावरण/स्कूलों व साथ ही विभिन्न पारिवारिक/आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ संवाद का अवसर मिला और उनके कहानियों से सम्बंधित जानकारी को समझने का अवसर ही प्राप्त हुआ. यह बात तो स्पष्ट थी कि कहानियों के प्रति रुझान तो था परन्तु उनकी कहानियों की किताबों अथवा उनकी उपलब्धता के स्थान तक पहुँच न हो पाने के कारण कहानियों के आनंद से वंचित थे. कार्यशाला में पूर्ण कहानियाँ बच्चों ने बनायीं हो , ऐसा नहीं था. हाँ, समूह में काम करना, विचारों में क्रमबद्धता लाना, विचारों को शब्द दे पाना- ये प्रयास वे अवश्य कर सके. वे इस प्रकार की गतिविधियों के प्रति उत्साहित भी दिखे. कहानी क्लब होना चाहिए, लाइब्रेरी होनी चाहिए, छुट्टी और इतवार के दिन कहानियों की कार्यशाला होनी चाहिए..इत्यादि सुझाव बच्चों ने कार्यशालाओं के दौरान सामने रखे. अब सचेतन के सामने ये एक चुनौती सरीखा है कि ये विचार हो कि किस प्रकार बच्चों की कहानियों के प्रति रूचि को पूरा किया जा सकता है व उनकी कल्पनाशीलता को मांझने के लिए गुणवत्तापरक रचनात्मक अवसर प्रस्तुत किये जा सकें.

कहानी कार्यशाला के सहभागी बच्चे

नाम एवं स्थान	नाम एवं स्थान	नाम एवं स्थान
दिया झंतानी, टीचर्स कॉलोनी	मुस्कान अम्बवानी,टीचर्स कॉलोनी	मेघा, पुलिस लाइंस
स्नेहा होट्वानी, टीचर्स कॉलोनी	तन्मय, टीचर्स कॉलोनी	पंकज, पुलिस लाइंस
अंकिता झमतानी, टीचर्स कॉलोनी	महेश, पुलिस लाइंस	सूरज, पुलिस लाइंस
पूजा होट्वानी, टीचर्स कॉलोनी	गौरव, पुलिस लाइंस	रिद्धि भारती, पुलिस लाइंस
सिमरन, टीचर्स कॉलोनी	आदित्य, पुलिस लाइंस	मनीषा, पुलिस लाइंस
सागर झमतानी, टीचर्स कॉलोनी	अनिकेत, पुलिस लाइंस	दीपाली, पुलिस लाइंस
याशिका बजाज, टीचर्स कॉलोनी	हर्षद, पुलिस लाइंस	नवनीत सिंह, पुलिस लाइंस
मनस्व सोनी, टीचर्स कॉलोनी	सूरज, पुलिस लाइंस	मिनाक्षी, पुलिस लाइंस
निशिका गनेरीवाल,टीचर्स कॉलोनी	दीपक, पुलिस लाइंस	पियूष, पुलिस लाइंस
खुश बजाज, टीचर्स कॉलोनी	किशनजीत, पुलिस लाइंस	योगेश, पुलिस लाइंस
हर्ष, टीचर्स कॉलोनी	जितेन्द्र, पुलिस लाइंस	ओमेन्द्र, पुलिस लाइंस
रिद्धि, टीचर्स कॉलोनी	मनभर, पुलिस लाइंस	राहुल, पुलिस लाइंस
हेमंत, पुलिस लाइंस	तक्षिका गनेरीवाल, टीचर्स कॉलोनी	अरुण, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
जयंत, पुलिस लाइंस	आशीष, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	चंचल, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
बबलू, पुलिस लाइंस	लेखराज, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	प्रियंका, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
निरंजन, पुलिस लाइंस	राहुल, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	कोमल, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
दिलखुश, पुलिस लाइंस	ओमप्रकाश गणेशपुराप्राथमिक विद्यालय	मुस्कान, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
देवयानी, पुलिस लाइंस	अनिकेत, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	रेखा, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
सुनीता, पुलिस लाइंस	कुंदन, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	पलक, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
मुस्कान खान, पुलिस लाइंस	काजल, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	बबीता, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
प्रिया, पुलिस लाइंस	अनुश्री, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय	पूजा, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय

अभिषेक, पुलिस लाइंस
प्रीती, पुलिस लाइंस
किरण, पुलिस लाइंस
आयुषी, पुलिस लाइंस
दीपिका, पुलिस लाइंस
रियांश, पुलिस लाइंस
आकाश, पुलिस लाइंस
रूबी, पुलिस लाइंस
सौमिलबजाज, टीचर्स कॉलोनी
चारुल, टीचर्स कॉलोनी
पुराले, टीचर्स कॉलोनी
निशिका, टीचर्स कॉलोनी
सुहासी बजाज, टीचर्स कॉलोनी
आयुष चतुर्वेदी, टीचर्स कॉलोनी
अवंतिका, श्रीराम नगर, बोरखेडा
कीर्तिका, श्रीराम नगर, बोरखेडा
नैतिक, श्रीराम नगर, बोरखेडा
तान्या, श्रीराम नगर, बोरखेडा
नेहा, श्रीराम नगर, बोरखेडा
नंदनी, श्रीराम नगर, बोरखेडा
गोलू, श्रीराम नगर, बोरखेडा
निकिता गर्ग, तुलापुरा
तरुण बैरागी, तुलापुरा

समीर, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
पूरण, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
अंजलि, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
ईशा, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
गुनगुन, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
सुमित, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
अरुण, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
शिवहँस, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
नैना, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
श्रवण, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
सतीश, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
मुस्कान, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
डॉली, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
कोमल, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
हर्षित मीणा, श्रीराम नगर, बोरखेडा
आयुष गुप्ता, श्रीराम नगर, बोरखेडा
राहुल सिंह, श्रीराम नगर, बोरखेडा
राजेश मीणा, श्रीराम नगर, बोरखेडा
विकास मेघवाल, श्रीराम नगर, बोरखेडा
विकास, श्रीराम नगर, बोरखेडा
मारुफ़, तुलापुरा
सेजल, तुलापुरा
उदयन, तुलापुरा

दीपाली, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
करन पंवार, गणेशपुराप्राथमिक विद्यालय
प्रियंका, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
सिमरन, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
शंकर, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
अमन, गणेशपुरा प्राथमिक विद्यालय
कुसुम, श्रीराम नगर, बोरखेडा
शिवानी, श्रीराम नगर, बोरखेडा
पूजा कुमारी, श्रीराम नगर, बोरखेडा
वंदना टाक, श्रीराम नगर, बोरखेडा
नंदनी मेघवाल, श्रीराम नगर, बोरखेडा
सिमरन, श्रीराम नगर, बोरखेडा
अमन वर्मा, श्रीराम नगर, बोरखेडा
श्रीशी, श्रीराम नगर, बोरखेडा
किरण, तुलापुरा
तनिषा खान, तुलापुरा
रोहित, तुलापुरा
अंकित, तुलापुरा
विशाल, तुलापुरा
अक्षिता, तुलापुरा
शाहीन कौसर, तुलापुरा
हर्षिता रंग्लावत, तुलापुरा
गौरव, तुलापुरा

साक्षी मीणा, तुलापुरा

आफरीन, तुलापुरा

भूमिका, तुलापुरा

पूनम वर्मा, तुलापुरा

मोनिका, तुलापुरा

ख़ुशी, तुलापुरा

सिमरन, तुलापुरा

सूरज, तुलापुरा

ख़ुशी, तुलापुरा

राखी, तुलापुरा

इशु, तुलापुरा

अरमान, तुलापुरा

रिदम सिंह, तुलापुरा

****

S A C H E T A N

(Society for Research Eductaion and Training)

Registered Office:

23, Shripad, Railway Society Colony, Bajrang Nagar, Kota. 324001**.**

email: sachetansociety@gmail.com**.**